''हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन''

मधुबाला (शोधार्थी) शिक्षा विभाग, एस.के.डी. विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़ (राज.)
डॉ. ललित कुमार (शोध निर्देशक) शिक्षा विभाग, एस.के.डी. विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़ (राज.)

प्रस्तावना :

शिक्षा शब्द अपने आप में अनेक अर्थों को लिए हुए है। शिक्षा मानव जीवन को उचित दिशा प्रदान करती है, शिक्षा मानव को अच्छा इंसान बनाती है, शिक्षा में उचित आचरण और तकनीकी दक्षता, शिक्षण और विद्या प्राप्ति आदि समाविष्ट है इस प्रकार यह कौशलों व्यापारों या व्यवसायों एवं मानसिक, नैतिक और सौन्दर्यविषयक के उत्कर्ष पर केन्द्रित है।

शिक्षा, समाज को एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है। जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज के प्रत्येक क्षेत्र की संस्कृति की निरंतर बनाए रखती है।

शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में व्यस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति कौशल प्रदान कराती है। इसी सन्दर्भ में स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था कि – ''मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।''

प्राचीन भारत में शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य मुक्ति की चाह रही है। (साः विद्या या विमुक्तये। विद्या उसे कहते हैं जो विमुक्त कर दे) बाद में समाज के परिवर्तनों के साथ–साथ शिक्षा के उद्देश्य भी बदल गए।

पाठक और त्यागी के अनुसार ''शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य की जन्मजात प्रवृतियों के स्वभाविक सामजस्यपूर्ण विकास में योगदान देती हैं, उसे जीवन और नागरिकता के कर्तव्यों और दायित्वों के लिए तैयार करती है, उसके व्यवहार, विचार और दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन करती है जो समाज और विश्व के लिए हितकर है।

शिक्षा व्यक्ति के ज्ञान में वृद्धि करती है जो उसके विकास में सहायक है। व्यक्ति के विकास में वांछनीय परिवर्तन करने के लिए व्यवस्थित शिक्षा तथा योग्य अध्यापकों की आवश्यकता होती है। बालक का सर्वांगीण विकास अध्यापक के आदर्शों सिद्धान्तों तथा व्यवहार पर निर्भर करता है। जितना महत्व शिक्षा का होता है उतना ही अध्यापक का होता है।

राष्ट्र के निर्माण में अध्यापक व शिक्षा दोनों प्रक्रिया का योगदान अतुलनीय है शिक्षा का यह महत्व अनन्तकालिन है क्योंकि उसका सीधा सम्बन्ध जीवन की अनन्तता से है। आज के युग में अध्यापक का दायित्व बहुत बढ़ गया है वह बालक के चरित्र–निर्माण के रूप में प्रयुक्त होता है। बालक कितना भी प्रतिभाशाली हो अध्यापक का मार्गदर्शन आवश्यक है।

कोठारी आयोग ने यह स्पष्ट शब्दों में कहा है कि ''भारत के भाग्य का निर्माण हमारी कक्षाओं में होता है।'' तथा कक्षाओं का भाग्य निश्चित रूप से अध्यापकों के हाथों में हैं।

इसी प्रकार माध्यमिक शिक्षा आयोग ने शिक्षा में शिक्षकों की स्थिति निश्चित करते हुए कहा है कि शिक्षक उसकी विशेषताओं शैक्षिक योग्यताओं, व्यवसायिक प्रशिक्षण तथा वह स्थान जो समाज में तथा स्कूल में प्राप्त करता है। शिक्षक के कार्य पर स्कूल की शान एवं राष्ट्र का भविष्य निर्भर करता है।

कार्य संतुष्टि :

कार्य संतुष्टि का अभिप्राय किसी कर्मचारी द्वारा उसके कार्य के प्रति निर्मित सामान्य अभिवृत्ति से है। इसका अनुमान इस आधार पर लगा सकते है कि कोई कर्मचारी अपने परिवेश से पुरस्कार की जो प्रत्याशा रखता है और वस्तुतः जितना प्राप्त होता है दोनों में कितना अन्तर है? यह एक प्रकार की अभिप्रेरणा है जिसके फलस्वरूप कर्मचारी अपना कार्य सम्पादित करने में असीम आनन्द की अनुभूति प्राप्त करता है। यह कार्य संतुष्टि वैयक्तिक स्तर पर अनुभूत किया जाता है और किसी भी रूप में इसकी सामूहिक व्याख्या नही की जा सकती है।

Copyright @ 2024 Author

बुलक के अनुसार, 'कार्य संतुष्टि एक अभिवृत्ति है जो बहुत सी चाही और अनचाही अनुभवों का परिणाम है जिसमें व्यक्ति के अपने कार्य के प्रति जुड़ाव को परिलक्षित करता है।'

ब्राउन के अनुसार, 'कार्य संतुष्टि, व्यक्ति के अपने कार्य स्थिति के पक्षगत अनुभव या मनौवैज्ञानिक परिस्थिति है।'

अध्यापक कार्य संतुष्टि की संकल्पना :

आदि काल से विद्वानों का मत यही रहा है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास होता है और मानसिक प्रक्रियाएं सुचारू रूप से कार्य करती है। कभी–कभी यह भी पाया जाता है कि दोनों (शरीर तथा मानसिक प्रक्रियाएं) का तालमेल ठीक बना हुआ है, पर्याप्त संतुलन है फिर भी व्यक्ति अपने को ऐसी स्थिति में पाता है कि वह उतना नहीं प्राप्त कर पा रहा है जितना उसे मिलना चाहिए था। कभी–कभी वह यह भी सोचता है कि उसके जीवन में कहीं कोई कमी है। कभी–कभी उसे यह अनुभूति होती है कि अब वह और अधिक पाने के लिए संघर्ष करने में असमर्थ है और अन्त में उसकी धारणा बन जाती है कि इतना सब करने की कोई आवश्यकता नहीं है, जो है वह पर्याप्त है।

इस प्रकार जब व्यक्ति की सोचने और चिंतन करने की प्रकृति बन जाती है तो वह यथार्थ से दूर चला जाता है और धीरे–धीरे तनाव के जाल में स्वंय फस जाता है। उसे वह सब कुछ मिल जाने पर भी जो उसे उसकी क्षमताओं एवं योग्याताओं के अनुकूल मिलना चाहिए था दुःखी रहने लगता है। मन की यह स्थिति ही असन्तोष है।

कार्य संतुष्टि किसी कर्मचारी में अंतर्निहित उसकी बहुत सी मनोवृत्तियों का परिणाम होता है। इन मनोवृत्तियों का संबंध मात्र कार्य से होता है तथा इसका संबंध कई विशिष्ट तत्वों में भी रहता है, जैसे पारिश्रमिक, पर्यवेक्षक, रोजगार की निरंतरता कार्य अवस्थाएं, प्रोन्नति के अवसर, कार्य का न्यायपूर्ण मूल्यांकन उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा आदि किसी न किसी रूप में कार्य संतुष्टि पर अवश्य प्रभाव डालती है। कर्मचारी के सर्वांगीण विकास के लिए अधिक वेतन, अच्छा रहन–सहन, शिक्षा तथा चिकित्सा संबंधी सुविधाएं, भविष्य की सुरक्षा आदि एक मात्र साधन नहीं है बल्कि उसका बौद्धिक विकास और संवेगात्मक अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर सब महत्वपूर्ण कारक ही बौद्धिक विकास समझने की क्षमता प्रदान करता है और संवेगात्मक अभिव्यक्ति जीवन संबंधी समस्याओं के ताल–मेल स्थापित करने में सहायक होती है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कार्य संतुष्टि व्यक्ति की एक ऐसी सुखद और धनात्मक, सांवेगिक अनुभूति है जो स्वतः व्यक्ति के अपने ही कार्य अथवा कार्य अनुभवों के मूल्यांकन से कम हो। यह भाव व्यक्ति के उस प्रत्यक्षीकरण मात्र से ही पैदा होता है कि उसके कार्य कहाँ तक जरूरी मूल्यों को संतुष्ट करने का अवसर देते है।

शिक्षण प्रभावशीलता की अवधारणा :

शिक्षण प्रभावशीलता शब्दों का सीधा सम्बन्ध शिक्षक के शिक्षण की प्रभावशीलता से है अतः शिक्षक अपने शिक्षण कार्य के द्वारा छात्रों को किस प्रकार संतुष्ट करता है? छात्रों पर पड़े शिक्षण प्रभाव को ही शिक्षण प्रभावशीलता कहते हैं। किसी भी शिक्षक की शिक्षण प्रभावशीलता का अर्थ उसकी शिक्षण प्रक्रिया से प्राप्त छात्रों का संतुष्टि स्तर, छात्रों की सफलता का स्तर, विशिष्ट एवं शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के स्तर से है। अतः शिक्षण प्रभावशीलता का सीधा सम्बन्ध शिक्षा की शिक्षण निष्पादन क्षमता से है, जिसको वह अपने शिक्षण कौशलों व अर्जित ज्ञान के माध्यम से छात्रों को कक्षा में पढ़ाते हुए अर्जित करता है।

अतः किसी भी शिक्षक की शिक्षण प्रभावशीलता शिक्षण प्रक्रिया निर्धारित मानक, आवश्यक कौशल एवं आवश्यक पर्यावरण से समन्वित होकर जो शिक्षक उपलब्धियां प्राप्त होती हैं यदि वे निर्धारित मानकों तथा आंतरिक तथा वाह्य सन्दर्भों के अनुकूल हैं तो शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली तथा उस शिक्षक को प्रभावशील शिक्षक कहा जाएगा।

एन.के. जंगीरा ने अपनी पुस्तक ''प्रभावशाली शिक्षण में बताया कि शिक्षण प्रभावशीलता अध्यापक के व्यतित्व व अन्य घटकों के साथ साथ प्रभावी शिक्षण पर निर्भर करती है। वस्तुतः यह एक बाल केन्द्र अवधारणा है अर्थात अध्यापक के शिक्षण की प्रभावशीलता की मापक उसकी कक्षा अन्तःक्रिया एवं बालकों की उपलब्धियाँ होती है।

 Copyright @ 2024 Author

अध्ययन का महत्व :

प्रभावशीलता और संतुष्टि व्यक्ति के व्यवहार के वे पक्ष है जो उसके व्यवसाय को प्रभावित करते है। यह समस्या एक व्यक्ति की न होकर सभी कर्मचारियों की मानी जाती है कि कार्यस्थल पर किस प्रकार की कार्य प्रणाली है। नौकरी से संतुष्टि शिक्षकों में एक महत्वपूर्ण कारक है जिसका प्रभाव व्यक्ति के जीवन में सभी क्षेत्रों पर पड़ता है। समाज में उनकी स्थिति, अवकाश के समय का सदुपयोग आदि भी व्यवसाय को प्रभावित करते है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने कार्य का हल या समाधान निकालना चाहिए ताकि सरलता से कार्य किया जा सकते।

बी.एड. महाविद्यालयों में कार्य करते हुए शिक्षक छात्रों को आगे बढ़ते देखकर जहां संतुष्टि का आभास करते है वही दूसरी और अत्यधिक प्रयास के बावजूद बार–बार समझाने पर यदि बालकों के परिणामों में अन्तर नही ला पाते है तो वह दबाव का अनुभव करते है अत्यधिक कार्य कर तथा कार्य प्रस्तुति के अनुकूल ना होने पर भी शिक्षकों को कार्य दबाव का सामना करना पड़ता है विकासात्मक युग में महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को जहां एक और छात्रों को पढ़ाने में सुख व संतुष्टि प्राप्त होती है वही उन्हे कार्य प्रकृति के कारण कार्य दबाव भी झेलना पड़ता है यदि दोनों परिस्थितियाँ साथ–साथ भी चल सकती है जिसका प्रभाव उनके कार्य निष्पादन पर पड़ता है इस समस्या के चयन करने का प्रमुख कारण है कि कार्य दबाव के कारण शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं प्रभावशीलता पर क्या प्रभाव पड़ता है इसे जानने के लिए शोधार्थी ने शोध समस्या के रूप में इस समस्या का चुनाव किया है।

शोध परिसीमाएं :

यह अध्ययन हनुमानगढ़ व श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शिक्षकों के तक सीमित किया गया है। दोनो जिलों के बी.एड. महाविद्यालयों के महिला व पुरूष शिक्षकों में से 600 शिक्षकों का चुनाव किया गया है। महिला एवं पुरूष शिक्षकों को ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के अन्तर्गत विभाजित किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
8- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
9- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
10- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
11- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

 Copyright @ 2024 Author

12- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
13- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
14- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं :
1- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
7- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
8- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
9- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
10- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
11- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
12- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
13- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
14- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन विधि : शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

न्यादर्श : शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों में से कुल 600 शिक्षकों को चुना गया है। जिसमें पुरूष एवं महिला शिक्षक तथा शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक सम्मिलित हैं।

उपकरण :
शोध हेतु निम्नलिखित प्रश्नावली एवं परीक्षा का उपयोग किया गया है –
क. अध्यापक कार्य संतुष्टि मापनी (व्यवसायिक संतुष्टि) (डॉ. मीरा दिक्षित)

 Copyright @ 2024 Author

ख. अध्यापक शिक्षण कुषलता/प्रभावशीलता मापनी (प्रमोद कुमार और डी.एन. मुथा)

शोध अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष :–

हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण प्रभावशीलता की तुलना हेतु 14 परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया। परिकल्पनाओं का वर्गीकरण एवं विश्लेषण व सार्थकता की जॉच की गयी जिनके परिणाम निम्न है –

1- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। तालिका संख्या 4.1 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 1. 32 प्राप्त हुआ है 598 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.96 एवं 2.59 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

2- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। तालिका संख्या 4.2 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 0.85 प्राप्त हुआ है 598 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1. 96 एवं 2.59 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

3- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। तालिका संख्या 4.3 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 0.16 प्राप्त हुआ है 298 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1. 97 एवं 2.59 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

4- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। तालिका संख्या 4.4 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 0.20 प्राप्त हुआ है 298 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.59 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

5- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। तालिका संख्या 4.5 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 1.35 प्राप्त हुआ है 298 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1. 97 एवं 2.59 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

6- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। तालिका संख्या 4.6 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 1.31 प्राप्त हुआ है 298 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.59 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि

Copyright @ 2024 Author

हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

7- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। तालिका संख्या 4.7 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 0.59 प्राप्त हुआ है 148 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

8- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। तालिका संख्या 4.8 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 1.32 प्राप्त हुआ है 148 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

9- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। तालिका संख्या 4.9 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 1.0041 प्राप्त हुआ है 148 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

10- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। तालिका संख्या 4.10 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 1.40 प्राप्त हुआ है 148 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के शहरी महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

11- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। तालिका संख्या 4.11 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 0.56 प्राप्त हुआ है 148 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

12- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। तालिका संख्या 4.12 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 0.19 प्राप्त हुआ है 148 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

Copyright @ 2024 Author

13- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। तालिका संख्या 4.13 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 0.31 प्राप्त हुआ है 148 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

14- हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। तालिका संख्या 4.14 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 0.58 प्राप्त हुआ है 148 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ एवं श्री गंगानगर जिले के बी.एड. महाविद्यालयों के ग्रामीण महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

- गारटिया, राधाकान्ता (2009), माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में उनकी कार्य संतुष्टि एवं जबावदेयता के मध्य संबंध का अध्ययन, एज्यूट्रेकस, नीलकमल पब्लिकेशन, अप्रैल 2009, वाल्यूम 08, नं. 8, पृ.सं. 29–34।
- दाबास, नीतू (2011), ए स्टडी ऑफ टीचर इफैक्टिवनेस अमॉग एलीमेंट्री स्कूल टीचर्स ऑफ हरियाणा इन रिलेशन टू देयर एटीट्यूड टूवार्डस टीचिंग एड सेल्फ कान्सेप्ट, http://hdlhandle.net/10603/7871 पीएच.डी. एज्यूकेशन, एम.डी. यूनिवर्सिटी, रोहतक।
- चौपड़ा, अरूणा (2015), जॉब सैटिसफेशन ऑफ टीचर एज्यूकेटर्स इन रिलेशन टू देयर, टीचिंग इफेक्टिव–नेस एण्ड प्रोफेशनल कमिटमेंट पीएच.डी. एज्युकेशन, कुरूक्षेत्र, यूनिवर्सिटी।
- ग्राहम, (2003), मनोविज्ञान और शिक्षा, न्यूयॉर्क और लंदन में सांख्यिकी
- पाण्डेय के.पी. (2012), नवीन शिक्षा मनोविज्ञान विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी।
- लाल रमन बिहारी (2004), भारतीय शिक्षा और उनकी समस्याएँ, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।
- सिंह, आर.आर. (2007). नैतिकता के लिए शिक्षा. जयपुर : आर.वी.एस.एस पब्लिशर्स. पृष्ठ संख्या–23
- हकीम, एम.ए. और अस्थाना, विपिन (1994). मनोविज्ञान की शोध विधियाँ. आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर. पृष्ठ संख्या–169
- व्यास, हरिशचन्द्र. (2001). हम और हमारी शिक्षा. जयपुर : पंचशील प्रकाशन चौड़ा रास्ता. पृ.सं. 17

 Copyright @ 2024 Author